## विचार बिन्दु

ख्याति की अभिलाषा वह पोषक है जिसे ज्ञानी भी सबसे अंत में उतारते हैं। –कहावत

# पत्रकारों का खास होना और मीडिया का स्वरूप बदलना

सोशल मीडिया पर एक सफल नौजवान मीडियाकर्मी ने एक बार दावा किया कि पत्रकार इसलिए खास होते हैं क्योंकि वे सवाल कर सकते हैं। उस मीडियाकर्मी को पत्रकार होने के नाते किसी भी बड़े से बड़े राजनेता से सवाल कर सकने का अभिमान था। आज के अधिकांश मीडियाकर्मियों के स्वभाव में ऐसा अभिमान झलकता है भले ही उनके पास पूछने के लिये कोई समझदार सवाल न हो, और न जवाब मिलने पर आगे सवाल करने की कोई तैयारी हो। सम्पादन विहीन सोशल मीडिया की मिली मुफ़्त दीवार, जिस पर कोई कुछ भी लिख सकता है, ने उन्हें अभिव्यक्ति की निर्बाध आजादी दी है। मगर मीडियाकर्मी से यह सवाल कौन पूछे कि हुजूर क्या आप अपने से भी कभी सवाल करते हैं? सवाल करने का हक तो भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को देता है। किसी पत्रकार को भी यह हक संविधान द्वारा आम नागरिक को दिए इसी अधिकार के तहत ही मिलता है। यह पत्रकार का या किसी समाचार संस्थान का अपना अलग से अधिकार नहीं है, जैसा अमरीका में फर्स्ट अमेंडमेंट के जरिए 'प्रेस' को मिला हुआ है। वर्तमान इफ़रात की अर्थव्यवस्था में मीडिया विराट हो चला है। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बाज़ार में माल बेचने के लिये मीडिया की पहुंच को अनंत विस्तार दे दिया है। समाचार भी अब माल की तरह पैकेजिंग के साथ बेचे जाने लगे हैं। कभी ज़माना गरीबी का था। लोग गरीब थे मगर वे दरिद्र नहीं थे। पत्रकार उन्हीं लोगों में से आते थे इसलिए स्वाभाविक ही वे भी गरीब ही होते थे। मगर वे भी दरिद्री नहीं होते थे। उनके पास आत्मविश्वास की अकूत पूंजी होती थी। तब के ज़माने के पत्रकार नहीं, उनकी कलम बोलती थी। वे लड़ते थे, संघर्ष करते थे जनता के लिए। वे गरीब जनता के दोस्त थे। वे जनता के अनिर्वाचित प्रतिनिधि हुआ करते थे। अखबारों के पाठक उनकी ताकत होते थे। पत्रकार अपने पाठकों –आम लोगों– के दोस्त होते थे, और उनसे वैसा ही दोस्ती का प्यार वापस पाते थे। पत्रकार लोगों को बहकाते नहीं थे। सच या हकीकत को ईमानदारी से बताते थे। उसे नाटकीय या सनसनीखेज बनाना पत्रकारिता का धर्म नहीं होता था। उनसे गलती हो जाती तो उसे तुरंत स्वीकार करने में उन्हें कोई गुरेज़ नहीं होता था, बल्कि इसे वे अपना फ़र्ज़ मानते थे। इसी कारण लोग प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कह कर मान देते थे। पत्रकारों की कलम में दम होता था क्योंकि वे गरीब जनता की लड़ाई लड़ते थे। पाठक उन्हें बड़े से बड़े राजनेता, अफसर धन-कुबेर से बड़ा मानते थे। मगर पत्रकार इसका गुमान नहीं करते थे। लोगों में बना अपना वह ग्लैमर कहीं न कहीं उनके मन को जरूर अच्छा लगता था। इससे श्रमजीवी पत्रकार के मन में पैसे की कमी का दर्द कम हो जाता था। तब भले ही पत्रकार संपन्नता में नहीं जीते थे, मगर समाज में उनकी हर कहीं इज्जत होती थी। यही उनकी बड़ी पूंजी होती थी। इसीलिए उस जमाने के अधिकतर पत्रकार अपने बच्चों के लिए संपत्तियां छोड़ कर नहीं गये। क्योंकि पत्रकारिता में भौतिक संपन्नता थी नहीं इसीलिए उस जमाने में पत्रकारिता में उन परिवारों के युवा नहीं आते थे जिनके सपने ऐश्वर्यशाली बनने के होते थे। पत्रकारिता के पेशे को अपनाने वाले विश्वासों को आंख मूंद कर स्वीकार करने को तैयार नहीं थे, तर्क करते थे और वैज्ञानिक सोच रखते थे। युवा पत्रकार एक ऐसे भविष्य की तरफ बड़ी आशा के साथ देखते थे जब सामाजिक और आर्थिक असामानता खत्म होनी थी। यही उनकी विश्वदृष्टि थी।

पत्रकार जब से अपने को खास मानने लगे तभी से वे आम-जन से दूर होते चले गये। उनमें खास होने का चस्का राजनेताओं ने लगाया। पत्रकार राजनेताओं के मित्र बनने लगे और शासन से तरजीह पाकर अपने को विशेष समझने लगे। पत्रकारों के लिए कहा जाता था कि वे लोकतंत्र में निर्वाचिन शासन और आम जनता के बीच की कड़ी हैं। आम जनता को यह बताना उनका फ़र्ज़ था कि निर्वाचित प्रतिनिधि लोक कल्याण का कैसा काम कर रहे हैं। इसके लिए किसी की तरफदारी या रंजिश के बगैर शासन के कामों का जायजा लेना, लोकहित के सरकारी कार्यक्रमों की जानकारी देना, ताकि लोग उनका लाभ उठा सकें, उन कार्यक्रमों की क्रियान्विति पर पैनी निगाह रखना और कहीं चूक हो तो उसे खुल कर उजागर करना और कोई अच्छा काम हो रहा हो तो उसका भी प्रचार करना मुख्यधारा के पत्रकारों का काम होता था। इस अवधारणा को भी स्वीकृति थी कि पत्रकार का काम शासन के हक़ में नहीं बल्कि उसके प्रतिरोध की भूमिका में और आम अवाम के समर्थन में खड़ा होना है। मगर खास होकर मीडियाकर्मी अपने को साधारण मानवीय शालीनता के मानकों से परे मानने लगे। पहले पाठक होते थे, फिर वे दर्शक हो गये और अब वे उपभोक्ता हैं। बाज़ार अध्ययन की भाषा को देखें; वह लक्ष्यों और रणनीतियों, कमज़ोरियों जैसे सैन्य शब्दों से भरी हुई है। मीडिया का नियामक बन गये बाज़ार की भाषा का पूरा लहज़ा युद्ध का है, मानो उपभोक्ता को जीतना और मुनाफा कमाना ही चरम लक्ष्य है। यह हमारे इतिहास का सबसे गतिशील युग माना जा रहा है। इस काल में मीडिया की तकनीक और प्रभाव में आ रहे परिवर्तन की दर सबसे तेज है। प्रिन्ट मीडिया के वैभव काल में जब एक बड़े संपादक से यह पूछा गया कि अखबार में क्या छपना चाहिए और क्या नहीं तब उसका जवाब था ईश्वर ने अपनी बुद्धि से जो कुछ भी दुनिया में घटित होने दिया, वह सब प्रकाशन योग्य है। वह भी समय था जब समाचार कक्ष में किसी डेस्क इंचार्ज से पूछा जाता कि अपन यह चित्र या स्टोरी क्यों चला रहे हैं तो वह झुंझला कर कहता यह समाचार है, बेवकूफ़! वास्तव में ऐसे सवाल सार्वजनिक रूप से कभी पूछे नहीं जाते थे। क्योंकि इसके जवाब में अक्सर पत्रकारिता का बदलता मिज़ाज़ सामने आता था। नये मिज़ाज़ में समाचार माध्यमों में खबरे खेल हो गईं। विकसित हो रही मुनाफे की पत्रकारिता को लगता है कि इस समाचारों के 'खेल' से अखबारों के पाठक और टीवी के दर्शक आकर्षित होंगे। अधिक पाठक और अधिक दर्शक अधिक विज्ञापन पाने में मदद करेंगे। समाचार माध्यम एक प्रकार से अपने पाठकों तथा दर्शकों को विज्ञापनदाताओं के बेचने लगे हैं। सभी माध्यम विज्ञापनदाताओं के लिए हो गये और उनके लिए पाठक व दर्शकों के रूप में ठाहक तैयार करना उनका मुख्य ध्येय हो गया। एक नया खतरनाक चलन भी बढ़ गया कि समाचार माध्यम विज्ञापन से इतर भी अपनी कमाई के जतन करने लगे। विज्ञापन के स्पेस की तरह खबरों के स्पेस बिकने लगे। तेजी से बढ़ते बड़े समाचार माध्यमों का यह चलन ठेट नीचे तक पहुंच गया। पीत पत्रकारिता शब्द ही अब खबरों की दुनिया से लुप्त हो गया है। अब तो संपादक और संवाददाता के बीच भेद भी समाप्त हो गया है। डिजिटल पटल पर अपनी बात कहने और वीडियो के जरिये दिखाने वाला प्रत्येक व्यक्ति रिपोर्टर भी है और संपादक भी और मालिक भी।

**आधुनिक पत्रकारिता का वह शुरुआती दौर था। अब तो टीवी के एंकर खुद पक्षकार बन कर पत्रकारिता को इस हद तक ले आये हैं कि आम दर्शक को उनसे जुगुप्सा होने लगी है। अब अखबारों का पाठक समूह और टीवी का दर्शक समूह व डिजिटल मेडिया का उपभोक्ता वही रह गया है जो पक्षधरों के साथ होता है - इधर या उधर। निष्पक्ष अब्जेक्टिव पत्रकारिता किताबों में पढ़ाने के लिए रह गई है।**

हर रिपोर्टर, लेखक और निर्माता अपने माल के लिए हमेशा अधिक से अधिक पाठक और दर्शक चाहता है। इसके लिए वे सारे व्यावसायिक यत्न करने के लिए व्यवसाय जगत के प्रबंधकों का दखल भी पत्रकारिता में हो गया है। इन व्यावसायिक प्रबंधकों ने समाचारों को एक पैकेजिंग डिवाइस में बदल दिया। समाचारों की ही नहीं समूचे अखबार और टीवी चैनलों के कार्यक्रमों की पैकेजिंग होने लगी जो अब सर्वत्र पसार गई है। नई संपन्नता के अहंकार में हर मिडियाकर्मी को लगने लगा कि वह जो चाहे कह सकता है। पुरानी पीढ़ी के संपादक राजेन्द्र माथुर ने इसी ट्रेंड को रेखांकित करते हुए एक बार लिखा था एक संवाददाता सुबह सुबह काले पेन्ट का डिब्बा तथा ब्रश लिये निकलता है और रास्ते में जो भी सफेद मूर्ति सामने आती है उसका मुंह काला करता चलता है। आधुनिक पत्रकारिता का वह शुरुआती दौर था। अब तो टीवी के एंकर खुद पक्षकार बन कर पत्रकारिता को इस हद तक ले आये हैं कि आम दर्शक को उनसे जुगुप्सा होने लगी है। अब अखबारों का पाठक समूह और टीवी का दर्शक समूह व डिजिटल मीडिया का उपभोक्ता वही रह गया है जो पक्षधरों के साथ होता है – इधर या उधर। निष्पक्ष अब्जेक्टिव पत्रकारिता किताबों में पढ़ाने के लिए रह गई है। कोई चार दशक पहले जब मीडिया के नए रुझान सामने आने लगे थे तब उस पीढ़ी के वरिष्ठ संपादकों को दिख रहा था कि नये मार्केटिंग दर्शन में मिशन वाली पत्रकारिता को किसी अन्य व्यवसाय की भांति और ठीक उसी उद्देश्य से चलाया जाने के जतन हो रहे हैं। मगर उन्हें विश्वास था कि इस तरह की दोहरी सोच लंबे समय तक नहीं बनी रह सकती है और जनता इस तरह की दोहरी सोच को अस्वीकार कर देगी। अब हम पाते हैं कि वे संपादक खुले बाज़ार की आंधी की विध्वंसात्मक क्षमता का ठीक अंदाजा नहीं लगा पाये। भारतीय मीडिया जगत के हालात ने उन्हें पूरी तरह गलत साबित कर दिया है। इसीलिए विश्वास और प्रतिष्ठा के मामले में पत्रकारिता का पेशा अब गिर कर सबसे निचली पायदान पर आ गया है। जिस प्रकार वोटिंग मशीनों से अपेक्षा की जाती है कि वह उसमें दर्ज किये गये मतों की वह सही गिनती करे और लोगों को विश्वास हो कि उनके मतों की सही गिनती हो रही है, वैसी ही अपेक्षा समाचार संस्थानों से भी करना खयाली पुलाव पकाने जैसा है।

**–अतिथि संपादक,**
**राजेन्द्र बोड़ा**
**( वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक )**

# राष्ट्रीय एकता और विकास के लिए गांधीवादी विश्वविद्यालय

अशोक कुमार

आज की दुनिया में हिंसा, असहिष्णुता, सामाजिक अन्याय, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय संकट जैसी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, सत्याग्रह और आत्मनिर्भरता के सिद्धांत इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं और एक बेहतर भविष्य का मार्ग दिखाते हैं। एक समर्पित विश्वविद्यालय इन विचारों का गहन अध्ययन और प्रसार कर सकता है। युवा पीढ़ी को महात्मा गांधी के जीवन, दर्शन और मूल्यों से परिचित कराना आवश्यक है ताकि वे एक नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। एक विश्वविद्यालय गांधीवादी विचारों को युवाओं तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने और उन्हें सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का एक शक्तिशाली माध्यम हो सकता है।

गहन अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देना: महात्मा गांधी के विचारों का अभी भी पूरी तरह से अन्वेषण नहीं किया गया है। एक समर्पित विश्वविद्यालय गांधीवादी दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर गहन अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा दे सकता है, जिससे नए ज्ञान और अंतर्दृष्टि का सृजन होगा। गांधीवादी विचार दर्शनशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और शांति अध्ययन जैसे कई विषयों से जुड़े हुए हैं। एक विश्वविद्यालय इन विभिन्न विषयों को एक साथ लाकर गांधीवादी विचारों का समग्र और अंत:विषयक अध्ययन प्रदान कर सकता है।

गांधीवादी अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले शिक्षकों और शोधकर्ताओं की आवश्यकता है जो इस ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचा सकें और इस क्षेत्र में अनुसंधान को आगे बढ़ा सकें। एक समर्पित विश्वविद्यालय ऐसे विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। महात्मा गांधी के विचार वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक हैं। एक विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों, कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं के बीच गांधीवादी विचारों पर संवाद और सहयोग को बढ़ावा दे सकता है।

राजस्थान का महात्मा गांधी के जीवन और कार्यों से गहरा संबंध रहा है। खेड़ा सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों के दौरान उनका यहाँ आना-जाना रहा। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण भी राजस्थान में महात्मा गांधी के नाम पर एक विश्वविद्यालय स्थापित करना उचित होगा।

विश्वविद्यालय छात्रों में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता और सामाजिक न्याय जैसे गांधीवादी मूल्यों को विकसित करने में मदद कर सकता है, जो एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक हैं।

एक गांधीवादी विश्वविद्यालय छात्रों को सामुदायिक सेवा और सामाजिक कार्यों में शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे वे गांधी के सेवा भाव और सामाजिक जिम्मेदारी के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से सीख सकें। ऐसा विश्वविद्यालय गांधीवादी विचारधारा के अनुयायियों और इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है, जिससे पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा। 2020 बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देता है, और गांधीवादी अध्ययन में दर्शनशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और साहित्य जैसे कई विषयों का समावेश होता है। इसलिए, महात्मा गांधी के अध्ययन पर एक विश्वविद्यालय स्थापित करना 2020 के सिद्धांतों के अनुरूप हो सकता है, खासकर यदि यह संस्थान गांधीवादी विचारों के विभिन्न पहलुओं में गहन अध्ययन और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करे।

**मूल गांधीवादी अध्ययन से संबंधित विषय:**

**गांधीवादी दर्शन और विचार:** यह विषय गांधी के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों जैसे सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, न्यासता, और उनके आध्यात्मिक और नैतिक विचारों का गहन अध्ययन करेगा।

**गांधी का जीवन और कार्य:** गांधी के प्रारंभिक जीवन से लेकर स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका और उनके अंतिम दिनों तक की जीवनी का विस्तृत अध्ययन। उनके प्रमुख आंदोलनों (जैसे असहयोग, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो) और उनके द्वारा स्थापित संस्थानों का अध्ययन। गांधी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी की नेतृत्व भूमिका, उनकी रणनीतियाँ और उनका प्रभाव। अन्य स्वतंत्रता सेनानियों और आंदोलनों के साथ उनके संबंध।

**गांधी का सामाजिक और राजनीतिक चिंतन:** जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, महिलाओं के अधिकार, ग्राम स्वराज, लोकतंत्र और राष्ट्रवाद पर गांधी के विचार। समकालीन सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर उनके विचारों की प्रासंगिकता। गांधी और अर्थशास्त्र: गांधी का स्वदेशी आंदोलन, ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था, विकेंद्रीकरण और शोषण मुक्त अर्थव्यवस्था का उनका दृष्टिकोण। वर्तमान आर्थिक नीतियों के संदर्भ में उनकी विचारों की प्रासंगिकता। **गांधी और धर्म:** सभी धर्मों के प्रति गांधी का दृष्टिकोण, धार्मिक सहिष्णुता, और धर्म का नैतिकता और राजनीति से संबंध। गांधी और संचार: गांधी के जनसंचार के तरीके, उनके लेखन, भाषण और आंदोलनों के माध्यम से लोगों को संगठित करने की उनकी क्षमता का अध्ययन।

**अंतर-विषयक दृष्टिकोण वाले विषय:**

**गांधी और दर्शनशास्त्र:** पश्चिमी और भारतीय दर्शन के संदर्भ में गांधी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन। नीतिशास्त्र, सामाजिक दर्शन और राजनीतिक दर्शन के साथ उनके विचारों का संबंध। गांधी और इतिहास: गांधी के जीवन और कार्यों का ऐतिहासिक संदर्भ, उनके समय की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ।

**इतिहास लेखन में गांधी का स्थान। गांधी और समाजशास्त्र:** भारतीय समाज पर गांधी के विचारों का प्रभाव, सामाजिक परिवर्तन के उनके तरीके, और सामुदायिक विकास में उनकी भूमिका। गांधी और राजनीति विज्ञान: गांधी के राजनीतिक विचार, सत्ता की अवधारणा, अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांत, और लोकतांत्रिक शासन के उनके विचार।

**गांधी और अर्थशास्त्र:** गांधीवादी अर्थशास्त्र के सिद्धांत, सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के साथ इसका संबंध।

**गांधी और साहित्य:** गांधी के लेखन का अध्ययन (जैसे हिंद स्वराज), उन पर और उनके आंदोलनों पर लिखे गए साहित्य का अध्ययन। गांधी और कला: गांधी के जीवन और दर्शन का कला, संगीत और रंगमंच पर प्रभाव। गांधी और शांति अध्ययन: संघर्ष समाधान, अहिंसक प्रतिरोध, और शांति निर्माण में गांधी के विचारों और तरीकों का अध्ययन।

**गांधी और मानवाधिकार:** मानवाधिकारों के प्रति गांधी का दृष्टिकोण और समकालीन मानवाधिकार आंदोलनों पर उनका प्रभाव। गांधी और पर्यावरण अध्ययन: प्रकृति के प्रति गांधी का सम्मान और सतत जीवन शैली के उनके विचार। पर्यावरण संरक्षण के आंदोलनों के लिए उनकी प्रासंगिकता।

**समकालीन प्रासंगिकता और अनुप्रयोग पर केंद्रित विषय:**

गांधीवादी विचार और समकालीन चुनौतियाँ: आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, गरीबी, असमानता और सामाजिक अन्याय जैसी वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन।

**गांधीवादी नेतृत्व और प्रबंधन:** नेतृत्व के गांधीवादी सिद्धांत और उनका आधुनिक प्रबंधन प्रथाओं में अनुप्रयोग।

**गांधीवादी आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन:** विभिन्न सामाजिक आंदोलनों पर गांधीवादी तरीकों का प्रभाव और सामाजिक परिवर्तन लाने में उनकी भूमिका।

**गांधी और मीडिया:** आधुनिक मीडिया के संदर्भ में गांधीवादी मूल्यों और संचार के तरीकों की प्रासंगिकता।

**गांधीवादी शिक्षा:** शिक्षा के प्रति गांधी का दृष्टिकोण और समकालीन शिक्षा प्रणालियों में उनके विचारों का अनुप्रयोग। यह विश्वविद्यालय इन विषयों के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध केंद्र, गांधीवादी संग्रहालय और अभिलेखागार भी स्थापित कर सकता है ताकि गांधीवादी अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सके। विश्वविद्यालय को अंत:विषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि छात्र गांधीवादी विचारों की समग्र समझ विकसित कर सकें और विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में उनके अनुप्रयोगों का पता लगा सकें।

महात्मा गांधी अध्ययन पर केंद्रित एक विश्वविद्यालय विभिन्न स्तरों पर शैक्षणिक डिग्री प्रदान कर सकता है, जो छात्रों की शैक्षणिक प्रगति और विशेषज्ञता को दर्शाती हैं। यहाँ उन संभावित शैक्षणिक डिग्रियों की सूची दी गई है जो इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जा सकती हैं।

स्नातक: बी.ए. (बैचलर ऑफ आर्ट्स) इन गांधीवादी अध्ययन: यह तीन वर्षीय डिग्री गांधी के जीवन, दर्शन, और प्रमुख विचारों की एक व्यापक नींव प्रदान करेगी।

बी.ए. (बैचलर ऑफ आर्ट्स) इन गांधी और सामाजिक विज्ञान: यह डिग्री गांधीवादी विचारों को समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के साथ जोड़कर अध्ययन कराएगी।

बी.ए. (बैचलर ऑफ आर्ट्स) इन गांधी और शांति अध्ययन: यह डिग्री संघर्ष समाधान, अहिंसक प्रतिरोध और शांति निर्माण के गांधीवादी सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करेगी।

डी.लिट्. (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) / डी.फिल. (डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी) (मानद उपाधि): यह विश्वविद्यालय गांधीवादी दर्शन या संबंधित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों को मानद उपाधियाँ भी प्रदान कर सकता है।

**डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम :** विश्वविद्यालय विभिन्न अवधि के डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी प्रदान कर सकता है, जो विशिष्ट कौशल या ज्ञान प्रदान करते हैं, जैसे: गांधीवादी विचारधारा में डिप्लोमा, अहिंसक संचार में सर्टिफिकेट, गांधीवादी सामाजिक कार्य में डिप्लोमा, शांति और संघर्ष समाधान में सर्टिफिकेट, गांधी और सतत जीवन शैली में सर्टिफिकेट

इन डिग्रियों और पाठ्यक्रमों के अलावा, विश्वविद्यालय अंत:विषयक अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए अन्य विभागों के साथ संयुक्त डिग्री कार्यक्रम भी प्रदान कर सकता है। उदाहरण के लिए, गांधी और पत्रकारिता, गांधी और कानून, आदि। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली शैक्षिणक डिग्रियाँ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हों और छात्रों को विभिन्न करियर पथों के लिए तैयार करें, चाहे वह शिक्षा, अनुसंधान, सामाजिक कार्य, नीति निर्माण या सक्रियता हो। पाठ्यक्रमों को समकालीन चुनौतियों और गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया जाना चाहिए। राजस्थान सरकार इस विषय पर चिंतन कर सकती है। जयपुर में एक अध्ययन केंद्र की बिल्डिंग का निर्माण किया गया है लेकिन उसके उपयोग के लिए अभी कोई योजना नहीं बनाई गई है।

**–अशोक कुमार,**
**पूर्व कुलपति कानपुर,**
**गोरखपुर विश्वविद्यालय,**
**विभागाध्यक्ष राजस्थान**
**विश्वविद्यालय जयपुर**

# 35 वर्षों से पर्यावरण संरक्षण व पशुधन संवर्धन क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं भंवरलाल खटीक

## बरूंदनी गांव निवासी भंवरलाल खटीक ने पर्यावरण संरक्षण और पशुधन संवर्धन के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक मिसाल कायम की है

**भीलवाड़ा,** (निसं)। भीलवाड़ा जिले के बरूंदनी गांव निवासी भंवरलाल खटीक ने पर्यावरण संरक्षण और पशुधन संवर्धन के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक मिसाल कायम की है। हाल ही में शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने राज्य स्तरीय वनस्पति बीज बैंक कार्यशाला के दौरान भंवरलाल खटीक के कार्यों को सराहते हुए उन्हें मंच पर सम्मानित किया। बीते 35 वर्षों से बरूंदनी गांव निवासी भंवरलाल खटीक ने अपने अथक परिश्रम और निजी संसाधनों से 200 हेक्टेयर क्षेत्र में चारागाह भूमि का विकास कर उसे हरियाली में बदल दिया है। उनका यह कार्य आज केवल गांव के लिए नहीं, बल्कि समूचे राजस्थान के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गया है।

शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने हाल ही में राज्य स्तरीय वनस्पति बीज बैंक कार्यशाला के दौरान भंवरलाल खटीक को सम्मानित किया था।

- 35 वर्षों से अपने अथक परिश्रम और निजी संसाधनों से 200 हेक्टेयर क्षेत्र में चारागाह भूमि का विकास कर उसे हरियाली में बदला
- भंवरलाल ने एक वनस्पति बीज बैंक की स्थापना की है, जिसमें विभिन्न उपयोगी घासों और वनस्पतियों के बीज एकत्र किये जाते हैं
- आसपास के क्षेत्रों के पशुपालक विकसित चारागाह भूमि से लाभान्वित हो रहे हैं

बरूंदनी गांव निवासी भंवरलाल खटीक ने चारागाह भूमि को न केवल हरित बनाया, बल्कि उसमें विभिन्न प्रकार की देशी वनस्पतियों और घासों का रोपण कर उसका संरक्षण भी किया। उन्होंने एक वनस्पति बीज बैंक की स्थापना की है, जिसमें विभिन्न उपयोगी घासों और वनस्पतियों के बीज एकत्र कर रखे जाते हैं, जिससे आसपास के क्षेत्रों में भी चारागाह विकास और पुनर्स्थान में सहयोग मिल रहा है। शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने हाल ही में आयोजित राज्य स्तरीय वनस्पति बीज बैंक कार्यशाला के दौरान भंवरलाल खटीक के कार्यों को सराहते हुए उन्हें मंच पर सम्मानित किया था।

मंत्री ने कहा कि खटीक जैसे व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होंने न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम कार्य किया है, बल्कि पशुधन के लिए भी एक सुरक्षित एवं हरित स्थान प्रदान किया है। बरूंदनी गांव और आसपास के क्षेत्रों के पशुपालक आज भंवरलाल खटीक द्वारा विकसित चारागाह भूमि से लाभान्वित हो रहे हैं। इस भूमि पर वर्षभर हरित चारा उपलब्ध रहता है, जिससे पशुओं को पौष्टिक आहार मिल रहा है। इसके चलते दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि हुई है और ग्रामीणों की आजीविका सशक्त हुई है। भंवरलाल खटीक का यह प्रयास यह सिखाता है कि यदि संकल्प दृढ़ हो तो व्यक्तिगत स्तर पर भी बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। उनका कार्य भावी पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, जलवायु संतुलन और सतत विकास की ओर प्रेरित करता है।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**बुधवार 23 अप्रैल, 2025**

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र दिन 12:08 तक, शुक्ल योग सायं 6:51 तक, विष्टि करण सायं 4:44 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सायं 4:44 तक है। महापात योग दिन 12:41 से सायं 4:32 तक है। आज पंचक है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** लाभ अमृत सूर्योदय से 9:12 तव, शुभ 10:49 से 12:25 तक, चर 3:38 से 5:14 तक, लाभ 5:14 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:59, सूर्यास्त 6:51

**मेष**

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसासियक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

**वृष**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**मिथुन**

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसासियक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कर्क**

व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आज स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

**सिंह**

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**कन्या**

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

**तुला**

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित मामलों में सोच-विचार होगा। कार्य योजना बन सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**वृश्चिक**

घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**धनु**

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मकर**

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**कुंभ**

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।